

॥ प्रधान-पूजा - साम्ब-परमेश्वर-पूजा (चतुर्थ-यामः) ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।

प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते अद्यब्रह्मणः द्वितीयपराङ्गे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणेपार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिकणां प्रभवादि षष्ट्याः संवत्सराणां मध्ये ()^१ नाम संवत्सरे उत्तरायणे शिशिर-ऋतौ कुम्भ-मासे कृष्ण-पक्षे त्रयोदश्यां/चतुर्दश्यां शुभतिथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर / भानु) वासरयुक्तायाम् ()^२ नक्षत्र ()^३ नाम योग () करण युक्तायां च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्याम् (त्रयोदश्यां/चतुर्दश्यां) शुभतिथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय आयुरारोग्य ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं पुत्रपौत्राभिवृद्ध्यर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्ध्यर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदनद्वारा सकल पापक्षयार्थं शिवरात्रौ श्री-साम्ब-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं चतुर्थ-यामपूजां करिष्ये।

॥ षोडशोपचारपूजा ॥

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसम्

रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।

पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानम्

विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥

अस्मिन् बिम्बे श्री-साम्ब-परमेश्वरं ध्यायामि।

^१पृष्ठ ?? पश्यताम्

^२पृष्ठ ?? पश्यताम्

^३पृष्ठ ?? पश्यताम्

नमस्ते रुद्र मन्यवं उतो त इष्वे नमः। नमस्ते अस्तु धन्वेन बाहुभ्यामुत ते नमः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय।
सद्योजातं प्रपद्यामि।

या त इषुः शिवतमा शिवं बभूव ते धनुः। शिवा शंख्यां या तव तया नो रुद्र मृडय॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय।
सद्योजाताय वै नमो नमः। आसनं समर्पयामि॥२॥

या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपांपकाशिनी। तयां नस्तनुवा शन्तंमया गिरिशन्ताभिचां कशीहि॥ ॐ ह्रीं नमः
शिवाय। भवे भवे नातिं भवे भवस्व माम्। पादयोः पाद्यं समर्पयामि॥३॥

यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे। शिवां गिरित्र तां कुरु मा हिंसीः पुरुषं जगत्॥ ॐ ह्रीं नमः
शिवाय। भवोद्भवाय नमः॥ अर्घ्यं समर्पयामि॥४॥

शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छावदामसि। यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्म सुमना असत्॥ ॐ ह्रीं नमः
शिवाय। वामदेवाय नमः। आचमनीयं समर्पयामि॥५॥

अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्। अहींश्चुः सर्वाज्जम्भयन्त्सर्वाश्च यातुधान्यः॥ ॐ ह्रीं नमः
शिवाय। ज्येष्ठाय नमः। मधुपर्कं समर्पयामि॥६॥

असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभूव सुमङ्गलः। ये चेमा रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः संहस्रशोऽवैषा हंडं
ईमहे॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। श्रेष्ठाय नमः। स्नानं समर्पयामि।

रुद्रम्। चमकम्। पुरुषसूक्तम्॥

स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि॥७॥

साक्षतजलेन तर्पणं कार्यम्॥

ॐ भवं देवं तर्पयामि। ॐ शर्वं देवं तर्पयामि। ॐ ईशानं देवं तर्पयामि। ॐ पशुपतिं देवं तर्पयामि। ॐ
रुद्रं देवं तर्पयामि। ॐ उग्रं देवं तर्पयामि। ॐ भीमं देवं तर्पयामि। ॐ महान्तं देवं तर्पयामि॥

ॐ भवस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ शर्वस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ ईशानस्य देवस्य पत्नीं
तर्पयामि। ॐ पशुपतेर्देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ रुद्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ उग्रस्य देवस्य पत्नीं
तर्पयामि। ॐ भीमस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ महतो देवस्य पत्नीं तर्पयामि॥

असौ योऽवसर्पति नीलंग्रीवो विलोहितः। उतैनं गोपा अदृशन्नुदृशन्नुदहार्यः। उतैनं विश्वा भूतानि स दृष्टो मृडयाति नः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवायं। रुद्राय नमः। वस्त्रोत्तरीयं समर्पयामि॥८॥

नमो अस्तु नीलंग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे। अथो ये अस्य सत्त्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नमः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवायं। कालाय नमः। यज्ञोपवीताभरणानि समर्पयामि॥९॥

प्र मुञ्च धन्वंनस्त्वमुभयोरार्त्नियोज्याम्। याश्च ते हस्त इषंवः परा ता भंगवो वप॥ ॐ ह्रीं नमः शिवायं। कलंविकरणाय नमः। दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि। गन्धस्योपरि अक्षतान् समर्पयामि॥१०॥

अवतत्य धनुस्त्वꣳ सहस्राक्ष शतैषुधे। निशीर्य शल्यानां मुखां शिवो नः सुमनां भव॥ ॐ ह्रीं नमः शिवायं। बलंविकरणाय नमः। पुष्पैः पूजयामि॥११॥

ॐ भवाय देवाय नमः। ॐ शर्वाय देवाय नमः।
 ॐ ईशानाय देवाय नमः। ॐ पशुपतये देवाय नमः।
 ॐ रुद्राय देवाय नमः। ॐ उग्राय देवाय नमः।
 ॐ भीमाय देवाय नमः। ॐ महते देवाय नमः॥
 ॐ भवस्य देवस्य पत्न्यै नमः। ॐ शर्वस्य देवस्य पत्न्यै नमः।
 ॐ ईशानस्य देवस्य पत्न्यै नमः। ॐ पशुपतेर्देवस्य पत्न्यै नमः।
 ॐ रुद्रस्य देवस्य पत्न्यै नमः। ॐ उग्रस्य देवस्य पत्न्यै नमः।
 ॐ भीमस्य देवस्य पत्न्यै नमः। ॐ महतो देवस्य पत्न्यै नमः॥

॥ शिवाष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

शिवाय नमः
 महेश्वराय नमः
 शम्भवे नमः
 पिनाकिने नमः

शशिशेखराय नमः
 वामदेवाय नमः
 विरूपाक्षाय नमः
 कपर्दिने नमः

| | | | |
|---------------------|----|--------------------------|----|
| नीललोहिताय नमः | | जटाधराय नमः | |
| शङ्कराय नमः | १० | कैलासवासिने नमः | |
| शूलपाणिने नमः | | कवचिने नमः | |
| खट्वाङ्गिने नमः | | कठोराय नमः | |
| विष्णुवल्लभाय नमः | | त्रिपुरान्तकाय नमः | |
| शिपिविष्टाय नमः | | वृषाङ्काय नमः | |
| अम्बिकानाथाय नमः | | वृषभारूढाय नमः | ४० |
| श्रीकण्ठाय नमः | | भस्मोद्धूलितविग्रहाय नमः | |
| भक्तवत्सलाय नमः | | सामप्रियाय नमः | |
| भवाय नमः | | स्वरमयाय नमः | |
| शर्वाय नमः | | त्रयीमूर्तये नमः | |
| त्रिलोकेशाय नमः | २० | अनीश्वराय नमः | |
| शितिकण्ठाय नमः | | सर्वज्ञाय नमः | |
| शिवाप्रियाय नमः | | परमात्मने नमः | |
| उग्राय नमः | | सोमसूर्याग्निलोचनाय नमः | |
| कपालिने नमः | | हविषे नमः | |
| कामारये नमः | | यज्ञमयाय नमः | ५० |
| अन्धकासुरसूदनाय नमः | | सोमाय नमः | |
| गङ्गाधराय नमः | | पञ्चवक्त्राय नमः | |
| ललाटाक्षाय नमः | | सदाशिवाय नमः | |
| कालकालाय नमः | | विश्वेश्वराय नमः | |
| कृपानिधये नमः | ३० | वीरभद्राय नमः | |
| भीमाय नमः | | गणनाथाय नमः | |
| परशुहस्ताय नमः | | प्रजापतये नमः | |
| मृगपाणये नमः | | हिरण्यरेतसे नमः | |

| | | | |
|--------------------|----|-------------------|-----|
| दुर्धर्षाय नमः | | अनेकात्मने नमः | |
| गिरीशाय नमः | ६० | सात्त्विकाय नमः | |
| गिरिशाय नमः | | शुद्धविग्रहाय नमः | |
| अनघाय नमः | | शाश्वताय नमः | |
| भुजङ्गभूषणाय नमः | | खण्डपरशवे नमः | |
| भर्गाय नमः | | अजाय नमः | |
| गिरिधन्वने नमः | | पाशविमोचकाय नमः | ९० |
| गिरिप्रियाय नमः | | मृडाय नमः | |
| कृत्तिवाससे नमः | | पशुपतये नमः | |
| पुरारातये नमः | | देवाय नमः | |
| भगवते नमः | | महादेवाय नमः | |
| प्रमथाधिपाय नमः | ७० | अव्ययाय नमः | |
| मृत्युञ्जयाय नमः | | हरये नमः | |
| सूक्ष्मतनवे नमः | | पूषदन्तभिदे नमः | |
| जगद्व्यापिने नमः | | अव्यग्राय नमः | |
| जगद्गुरवे नमः | | दक्षाध्वरहराय नमः | |
| व्योमकेशाय नमः | | हराय नमः | १०० |
| महासेनजनकाय नमः | | भगनेत्रभिदे नमः | |
| चारुविक्रमाय नमः | | अव्यक्ताय नमः | |
| रुद्राय नमः | | सहस्राक्षाय नमः | |
| भूतपतये नमः | | सहस्रपदे नमः | |
| स्थाणवे नमः | ८० | अपवर्गप्रदाय नमः | |
| अहये बुध्न्याय नमः | | अनन्ताय नमः | |
| दिगम्बराय नमः | | तारकाय नमः | |
| अष्टमूर्तये नमः | | परमेश्वराय नमः | |

॥इति शाक्तप्रमोदे श्री शिवाष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा॥

॥ उत्तराङ्ग-पूजा ॥

विज्यं धनुः कपर्दिनो विशंल्यो बाणवाꣳ उत। अनेशन्नस्येषव आभुरंस्य निषङ्गतिः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवायं। बलाय नमः। धूपमाग्रापयामि॥१२॥

या ते हेतिर्मीढुष्टम हस्तं बभूव ते धनुः। तयाऽस्मान् विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिब्भुज॥ ॐ ह्रीं नमः शिवायं। बलप्रमथनाय नमः। अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि॥१३॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। + ब्रह्मणे स्वाहा। नमस्ते अस्त्वायुधायानां तताय धृष्णवै। उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने॥ ॐ ह्रीं नमः शिवायं। सर्वभूतदमनाय नमः। () निवेदयामि। मध्ये मध्ये अमृतपानीयं समर्पयामि। अमृतापिधानमसि।

हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि। पादप्रक्षालनं समर्पयामि। निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि॥१४॥

परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः। अथो य इषुधिस्तवाऽऽरे अस्मन्नि धेहि तम्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवायं। मुनोन्मनाय नमः। कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि॥१५॥

नमस्ते अस्तु भगवन् विश्वेश्वराय महादेवाय त्र्यम्बकाय त्रिपुरान्तकाय त्रिकाग्निकालाय कालाग्निरुद्राय नीलकण्ठाय मृत्युञ्जयाय सर्वेश्वराय सदाशिवाय श्रीमन्महादेवाय नमः॥ कर्पूरनीराजनं दर्शयामि॥१६॥

॥ रक्षा ॥

बृहत्सामं क्षत्रभृद्बुद्धं वृष्णिं त्रिष्टुभौजंः शुभितमुग्रवीरम्। इन्द्रस्तोमेन पञ्चदशेन मध्यमिदं वार्तेन सगरेण रक्ष॥

रक्षां धारयामि॥

॥ नमस्काराः ॥

ॐ भवाय देवाय नमः।

ॐ शर्वाय देवाय नमः।

ॐ ईशानाय देवाय नमः।

ॐ पशुपतये देवाय नमः।

ॐ रुद्राय देवाय नमः।

ॐ उग्राय देवाय नमः।

ॐ भीमाय देवाय नमः।

ॐ महते देवाय नमः॥

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम्॥ ॐ
ह्रीं नमः शिवाय। मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

शिवाय नमः। रुद्राय नमः। पशुपतये नमः। नीलकण्ठाय नमः। महेश्वराय नमः। हरिकेशाय नमः।
विरूपाक्षाय नमः। पिनाकिने नमः। त्रिपुरान्तकाय नमः। शम्भवे नमः। शूलिने नमः। महादेवाय नमः। इति
द्वादशनामभिर्द्वादशपुष्पाञ्जलीन् दत्त्वा॥

प्रदक्षिणनमस्कारान् कृत्वा॥

॥ अर्घ्यप्रदानम् ॥

ममोपात्त समस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम् शिवरात्रौ चतुर्थ-याम-पूजान्ते क्षीरार्घ्यप्रदानं
करिष्ये॥

शिवरात्रिव्रतं देव पूजाजपपरायणः।
करोमि विधिवद्भक्तं गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते॥

इत्यर्घ्यं दत्त्वा।

किं न जानासि देवेश त्वयि भक्तिं प्रयच्छ मे।
स्वपादाग्रतले देव दास्यं देहि जगत्पते॥४॥

॥ पूजानिवेदनम् ॥

बद्धोऽहं विविधैः पाशैः संसारभयबन्धनैः।
पतितं मोहजाले मां त्वं समुद्धर शङ्कर॥४॥

यत्किञ्चित् कुर्महे देव सदा सुकृतदुष्कृतम्।

तन्मे शिवपदस्थस्य भुङ्क्ष्व क्षपय शङ्कर॥

शिवो दाता शिवो भोक्ता शिवः सर्वमिदं जगत्।

शिवो जयति सर्वत्र यः शिवः सोऽहमेव हि॥

इति प्रार्थ्य॥

देवहृदयस्थं पादस्थं च पुष्पमादाय प्रणम्य देवेन दत्तमिति ध्यात्वा॥

प्रपन्नं पाहि मामीश भीतमृत्युमहार्णवात्।

त्वयोपभुक्त-स्रग्-गन्ध-वासो-लङ्कार-चर्चिताः।

उच्छिष्टभोजिनो दासास्तव मायां जयेम हि॥

इति मूर्ध्नि धृत्वा॥

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं महेश्वर।

यत्कृतं तु मया देव परिपूर्णं तदस्तु ते॥

अनेन पूजनेन साम्बसदाशिवः प्रीयताम्।

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा

बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।

करोमि यद्यत् सकलं परस्मै

नारायणायेति

समर्पयामि॥

ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु।